

अन्तर-बाहिर परिग्रह टारि, परम दिगम्बर-व्रत को धारि ।
 सर्व जीव-हित-राह दिखाय, नमों अनन्त वचन-मन लाय ॥
 सात तत्त्व पंचास्तिकाय, अरथ नवों छ दरब बहु भाय ।
 लोक अलोक सकल परकास, बन्दौं धर्मनाथ अविनाश ॥
 पंचम चक्रवर्ती निधि भोग, कामदेव द्वादशम मनोग ।
 शान्तिकरन सोलम जिनराय, शान्तिनाथ बन्दौं हरषाय ॥
 बहु थुति करे हरष नहिं होय, निन्दे दोष गहैं नहिं कोय ।
 शीलवान परब्रह्मस्वरूप, बन्दौं कुन्थुनाथ शिव-भूप ॥
 द्वादश गण^१ पूजैं सुखदाय, थुति वन्दना करें अधिकाय ।
 जाकी निज-थुति कबहुँ न होय, बन्दौं अर-जिनवर-पद दोय ॥
 पर-भव रत्नत्रय-अनुराग, इह भव ब्याह-समय वैराग ।
 बाल-ब्रह्म पूरन-व्रत धार, बन्दौं मल्लिनाथ जिनसार ॥
 बिन उपदेश स्वयं वैराग, थुति लोकान्त करै पग लाग ।
 नमः सिद्ध कहि सब व्रत लेहि, बन्दौं मुनिसुव्रत व्रत देहि ॥
 श्रावक विद्यावन्त निहार, भगति-भाव सों दियो अहार ।
 बरसी रतन-राशि तत्काल, बन्दौं नमिप्रभु दीन-दयाल ॥
 सब जीवन की बन्दी छोर, राग-द्वेष द्वय बन्धन तोर ।
 रजमति तजि शिव-तिय सों मिले, नेमिनाथ बन्दौं सुखनिले ॥
 दैत्य कियो उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयो फनिधार ।
 गयो कमठ शठ मुख कर श्याम, नमों मेरु-सम पारसस्वाम ॥
 भव-सागर तैं जीव अपार, धरम-पोत में धरे निहार ।
 डूबत काढ़े दया विचार, वर्द्धमान बन्दौं बहु बार ॥

(दोहा)

चौबीसों पद-कमल-जुग, बन्दौं मन-वच-काय ।

‘द्यानत’ पढ़ै सुनै सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय ॥